

19, 15. यो वक्त्रं परिशोधयति त्रिङ्गा स्तम्भयति कण्ठं वध्नाति हृदयं कष-
ति पीडयति च स कषायः (रसः) 133, 7. 136, 15. PAKĀT. 61, 11. 234, 11.
Bhāg. P. 3, 26, 42. कषायणि तित्कानि कुरुकानि च । भक्तयन् R. 2, 12, 93.
— b) wohlriechend Trik. 3, 1, 19. 3, 107. H. an. MED. स्फुटितकमलामो-
दमैत्रीकषायः (वातः) MEGH. 32. — c) roth, dunkelroth; subst. die rothe
Farbe H. an. MED. gelbroth Svāmin zu AK. CKDr. कषायवासम् JĀGĀ. 1,
272. Suçr. 1, 7, 7. von der Farbe einer Schlange 2, 263, 14. ०दशन und
०दत्त von einer Maus 278, 2. 279, 8. कषायकण्ठ (sic) Dhūrtas. 67, 8. कषा-
येण रक्ते वस्त्रम् P. 4, 2, 1, Sch. कषायरक्त MBh. 14, 1263. तेषां (तापसानां)
मौण्यं कषायश्च वासे रात्रिश्च कारणम् 13, 6327 (vgl. प्रुल्लदत्ताजितानाश्च
मुण्डाः कापायवाससः । प्रुद्धा धर्मं चरिष्यन्ति शाक्यबुद्धायसीविनः ॥ HARIV.
11142. MBh. 12, 566). कषायवस्त्ररचना MĀKĀ. 114, 5. ein gelbrothes
Kleid: निर्वेदधृतकषायं भिन्नुम् 113, 3. BURN. Intr. 180, N. 1. Hierher gehört
wohl auch: कषायं सुलभं पश्चान्मुनीनां शममिच्छताम् MBh. 2, 675. — 2) subst.
m. n. a) ausgekochter Saft: पर्णकषाय ÇAT. Br. 6, 5, 1, 1. KĀTJ. Ça. 16, 3,
16. प्रुक्तानि च कषयाश्च पीत्वा मेध्यान्यपि द्विजः । तावद्वत्यप्रयतो याव-
त्तत्र व्रजत्यथः ॥ M. 11, 153. झङ्गकषाय vom menschlichen Samen ÇAT.
Br. 14, 9, 4, 8. In der Med. Decoct; diejenige Form der Medicin, bei
deren Bereitung ein Theil des Arzneistoffes mit vier, nach Andern mit
acht oder sechzehn Theilen Wasser gemischt und die Mischung bis auf
ein Viertel eingekocht wird: तत्र केचिदाहुस्त्वकषयत्रमूलादीनां भागस्त-
च्चतुर्गुणतलमाप्य चतुर्भागावशेषं निःक्राव्यापहरेदित्येष कषायपाकक-
ल्पः Suçr. 2, 173, 9. 21. 1, 13, 3. 16, 6. 18, 5. 38, 5. 139, 8. 14, 15. 17. 160, 11.
2, 48, 16. fgg. 116, 3. कल्काशूर्णकषयांश्च R. 2, 91, 67. Accent eines auf
कषाय ausgeh. comp. P. 6, 2, 10. उमापुष्पकषायम् Sch. कषाय = निर्वास
Decoct, aber auch jede vegetabilische Ausschwitzung wie Harz u. s. w.
AK. 3, 4, 24, 155. H. an. MED. — b) Salbe, Schminke, = सनालम्भन
Trik. 2, 6, 10. = विलेपन und रागवस्तु H. an. = विलेपन und झङ्गराग
MED. घृष्टे वरकषायेन (sic) अनुलिप्तः प्रियङ्गुना । क्षीरेण षष्टिकान्मुक्त्वा
सर्वपायैः प्रमुच्यते ॥ MBh. 13, 5970. शिरोरुद्धैः स्नानकषायवासितैः R. 1,
1. — c) (Bodensatz) Schmutz; übertragen Unreinigkeit, Verdummung,
Versumpfung, Verfall (vgl. कल्काः) कर्णकषाय Bhāg. P. 2, 6, 45. तस्मै
मुदितकषायाय (Çaṅk.: कषायो रागद्वेषादिदोषः) KĀND. Up. 7, 26, 2. अवि-
पक्षकषायाणां उर्द्वशी ऽहं कुपोगिनाम् Bhāg. P. 1, 6, 22. निर्मथिताशेषक-
षायधिषणो ऽर्जुनः 13, 29. विधुनोति कामं कषायं मलमत्तरात्मनः 4, 22, 20.
कषायस्य लक्षणम् (viell. mit Anspielung auf die Kleiderfarbe der bud-
dhistischen Geistlichen) ein Anzeichen des Verfalls HARIV. 11182. fgg.
कषायोपप्लवे काले 11184. Die Buddhisten nehmen 5 कषाय an: आयुष्क-
षाय, दृष्टि, क्लेश, सन्न, कल्प VJUP. 66. BURN. Lot. de la b. I. 334.
कषाय = क्रोधादयः H. an. In der Philos.: लयवित्तेपणाभावे (CKDr.
०वित्तेपणाभावे) ऽपि चित्तवृत्ते (CKDr. चित्तस्य) रागादिवसनया स्तब्धोभा-
वाद्वाण्डवस्त्वनवलम्बनं कषायः VEDĀNTAS. in BENF. Chr. 218, 1. 217, 22.
attachment to worldly objects WILS. — 3) m. a) Leidenschaft (राग)
Svāmin zu AK. im CKDr. — b) das Kalijuga SĪRAS. zu AK. im CKDr.
Beide Bedeutungen gehen wohl in 2, c auf. — c) Name eines Baumes,
Bignonia indica (श्यानाक), DHAR. im CKDr. — d) N. pr. eines Lehrers
gaga शौनकादि zu P. 4, 3, 106. — 4) m. f. n. Name eines Baumes, Gris-
lea tomentosa Roxb. (धव), RĪGĀN. im CKDr. — 5) f. कषाया Name

einer Pflanze (तुङ्गडुरालभा) RĪGĀN. im CKDr. — Vgl. पञ्चकषाय und
कापाय.

कषायकृत् (क० + कृत्) m. N. eines Baumes, Symplocos racemosa
Roxb. (रक्तलोध), ĠATĀDH. im CKDr.

कषायता (von कषाय) f. das Zusammenziehen: मुख० Suçr. 2, 213, 8.

कषायपाण (कषाय + पान) m. pl. ein Spottname (ausgekochte Säfte
—, Decocte trinkend; der Gāndhāra P. 8, 4, 9, Sch.

कषायपावनाल (क० + पा०) m. eine best. Kornart (तुङ्गपावनाल)
RĪGĀN. im CKDr.

कषायवासिक (von क० + वास Kleid) m. ein best. giftiges Insect
Suçr. 2, 237, 13. काषाय० 288, 9.

कषायित (von कषाय) adj. geröthet, gefärbt: क्रोधावेशकषायितनयनम्
PRAB. 102, 9. ईर्ष्याकषायिता SĪD. D. 114. कषायिते हि वस्त्रदौ भूयाव्रगो
विवर्धते 83, 6. अमुनेव कषायितस्तनी मुनेन प्रियगात्रभस्मना KUMĀRAB.
4, 34.

कषायिन् (wie eben) m. N. verschiedener Pflanzen: Shorea robusta
(शाल) ĠATĀDH.; Artocarpus Lacucha (लकुच) Roxb.; der wilds Dattelbaum
(खर्जूरी) RĪGĀN. im CKDr.

कषायीकृत (कषाय + कृत) adj. geröthet: ०लोचन MBh. 1, 4097. 5136.
R. 6, 33, 17.

कषायीभूत (कषाय + भूत) adj. roth geworden, geröthet: ०लोचन Bhāg.
P. 7, 3, 34.

कर्षि (von कर्ष) adj. Schaden zufügend Uṇ. 4, 141.

कैरीका f. ein best. Vogel (पक्षिजाति) Uṇ. 4, 16. कषिका CKDr. und
WILSON (a bird in general). — Vgl. कशीका.

कषेरुका f. Rückgrat RĪJAM. zu AK. 2, 6, 2, 20. CKDr. — Vgl. कशे-
रुका.

कैष्कष m. ein best. schädliches Insect AV. 5, 23, 7. — Viell. eine
redupl. Form von कष्.

कष्ट P. 6, 2, 47, Sch. 1) adj. f. आ schlimm, arg: प्राप्तं कुलीनं शूरं च
दत्तं दातारमेव च । कृतज्ञं धृतिमत्तं च कष्टमाङ्गरिं बुधाः ॥ M. 7, 210. स
हि कष्टतरो रिपुः 186. कष्टा दारुणद्वेषेण घोरद्वेषा निशाचरी MBh. 3,
14481. बन्धनानि च कष्टानि M. 12, 78. 7, 50, 51. व्यसनस्य च मृत्योश्च
व्यसनं कष्टमुच्यते 53. आपद्यपि च कष्टायाम् JĀGĀ. 3, 29. कष्टान्नरकान्या-
न्ति 221. MBh. 13, 2365. R. 1, 11, 15. 2, 73, 40. Daç. 1, 38. इतः कष्टतरे किं
नु Hīd. 1, 5, 29. कष्टा दशो गतः MBh. 3, 17303. BHARTṢ. 2, 22. कष्टायाम-
प्यवस्थायाम् R. 3, 31, 23. मधामात्परतस्त्वन्यदामं कष्टं न विद्यते Suçr. 1,
186, 9. 271, 6. 2, 133, 21. 274, 19. 343, 5. 429, 3. कष्टा वृत्तिः पराधीना क-
ष्टे वासो निराश्रयः । निर्धनो व्यवसायश्च सर्वकष्टा द्रिद्रता ॥ KĀN. 59.
PAKĀT. I, 226. MĀLAV. 63, 10. VIKR. 42. RAGH. 14, 56. KATHĀS. 4, 70. 10.
79. 20, 197. VET. 33, 17. Bhāg. P. 5, 3, 1. कष्टस्थान n. ein schlimmer Platz
CKDr. und WILS. angeblich nach HĀR. कष्टतपम् der arge d. i. grosse
Busse übt ÇĀK. 100, 14. Nach P. 7, 2, 32. AK. 3, 4, 9, 42. H. an. 2, 82. MED.
1, 6 hat कष्ट die Bed. von कृच्छ्र und गहन. Nach P. und Vop. 26, 111
ist कष्ट partic. praet. pass. von कष्; für die Bed. कृच्छ्र führt der Schol.
des P. die Beispiele कष्टे ऽग्निः (एषो ऽग्निरुत्थितः कष्टस्त्रायधं धावताधुना
N. [Bopp] 13, 16) und कष्टं व्याकरणम् auf, für die Bed. गहन die Bei-
spiele कष्टानि वनानि und कष्टाः पर्वताः. Nach einer KĀR. zu P. 3, 2, 88